श्रीरामचंद्र जिनपूजा

(तर्ज-मत्तगयंद)

इक्ष्वाकुवंशज रघुकुल अंशज दशरथनंदन राम कहाये,
ब्रह्म सुस्वर्गसे गर्भमें आय श्रीकौशल्या मात के भाग संवारे ;
श्रेष्ठ नरोत्तम ज्येष्ठ सुतोत्तम अवधपूरीपति नाथ हमारे,
हे रघुनंदन ! आन विराजो पूजन को हम थाल सजाये|

ॐ ह्रीं श्रीरामचंद्रभगवज्जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्, इति आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं श्रीरामचंद्रभगवज्जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीरामचंद्रभगवज्जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्, इति सन्निधिकरणम् ।
(परिपुष्पांजलि क्षिपेत्)

(तर्ज-गज़ल)

कनकमय नीर कलशों से पखारूँ पद्म चरणों को,
अनादि जन्म-मरणादि नशाऊँ सर्व कर्मो को ;
भजो श्रीराम सुखकारी प्रभु का नाम भवतारी,
बसो मम हृदय अविरामी अनंता गुणनिधि स्वामी|

ॐ ह्रीं श्रीरामचंद्रभगवज्जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि० स्वाहा|

प्रशम रसयुक्त प्रभु पद में करूं शुभ गंध का लेपन,
परस निज आत्म गुण शीतल हरुं भवताप का वेदन। भजो०

ॐ ह्रीं श्रीरामचंद्रभगवज्जिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं नि० स्वाहा|

शशि किरणो के सम उज्ज्वल अखंडित शुभ्र अक्षत ले,
अखयपददायी चरणों में चढाऊं भाव भक्ति से; भजो०

ॐ ह्रीं श्रीरामचंद्रभगवज्जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि० स्वाहा|

कमल कुन्दादि पुष्पोंका चढाऊं हर मनहारी,
हरो त्रय वेद दु:खकारी विभुवर पद्म अविकारी : भजो०

ॐ ह्रीं श्रीरामचंद्रभगवज्जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि० स्वाहा |

क्षुधा की खाई अति गहरी नहीं जड़ द्रव्य से भरती,
करू अर्पण मधुर व्यंजन शरण प्रभु की क्षुधा हरती; भजो०

ॐ ह्रीं श्रीरामचंद्रभगवज्जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० स्वाहा|

रतनमय दीप ज्योति से उतारूं आरती थारी,
चिदानंदी स्वरूप स्वामी हरो मम मोह तमहारी ; भजो०

ॐ ह्रीं श्रीरामचंद्रभगवज्जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं नि० स्वाहा|

त्रिविध तापों की अग्नि में करम ईंधन अतिभारी,
उखेवुं धूप चरणो में प्रभु जो राग रुष टारी; भजो०
ॐ ह्रीं श्रीरामचंद्रभगवज्जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि० स्वाहा।

सहस्त्रों नाम गुण जिनके उन्हें गिन गिन चढाऊँ क्यों ?
मंगाकर सुफल ऋतुऋतु के रिजाऊँ आज शिवपति को; भजो०
ॐ ह्रीं श्रीरामचंद्रभगवज्जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० स्वाहा।

समर्पित अष्टद्रव्यों संग करूं तन वचन मन आतम्
नमुं अष्टम धराधर को समरचुं सुगुणनिधि पावन् भजो०
ॐ ह्रीं श्रीरामचंद्रभगवज्जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं नि० स्वाहा।

जयमाला

(तर्ज-नरेन्द्र छंद)

जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में नगरी अयोध्या पहिचानी,
मुनिसुव्रत प्रभु के शासन में दिव्य कथा जन जन जानी;
त्रेसठश्लाघा पुरुषो में बलदेव राम महिमाधारी,
सूर्यवंशी ख्युकुल दीपक का पद्मचरित अतिशयकारी। १

कोटी जिह्वा से गा कर कोई जिनके गुण नहीं गा सकता,
ऐसे प्रभु श्री रामचन्द्र का गुण गौरव मुझ मन भाता;
दशरथ नृप के चार पुत्र में ज्येष्ठ पुत्रवर कहलाये,
सौम्यदृष्टि मर्यादा नरोत्तम दूर दिशांतर तक छाये। २

मिथिलापुरी में जनक नंदिनी के विवाह हित वाद्य बजे,
जीत स्वयंवर में सिय को फिर रघुकुल गौरव ब्याह रचे;
मैत्री करुणा स्नेह विनययुत सम शम गुण की खान भरे,
तेजवंत की मंद मधुस्मित अधर युगल से नित्य झरे। ३

(तर्ज – हरिगीत छंद)

करने तिलक रघुराय का खुशियाँ अवध में छा गई,
पर पुत्र में मोहित कैकेया कुटिल रूप दिखा रही;
रघुकुल रीत निभाऊँ किं दशरथ व्यथित मन मांही थे,
मर्यादा रख निज पितृ वच की वन गए रघुराई थे। ४

(तर्ज – नरेन्द्र छंद)

जिनके चित्त में वेग सहित संवेग भावना बहती है,
ऐसे श्रीरघुराय चरण में ऋद्धिसिद्धयाँ रहती हैं;
शांत चित्त आनंद युक्त नित वन नगरोंमें विहरते है,
लखन सिया सह श्रीरघुनंदन जन जन का मन हरते है | ५

कुलभूषण देशभूषण मुनि के उपसर्गों को दूर किया,
व्रजकर्ण हनुमान विराधित विभीषण सबको शरण लिया;
गृद्ध जटायु अतिवीर्य सुग्रीव वृषभरूप तार दिया,
हमको भी भव पार करो प्रभु हमने क्या अपराध किया| ६

(तर्ज – हरिगीत छंद)

सीता हरण लंका दहन रावण मरण चर्चित है,
अग्निपरीक्षा में अड़िग आदर्श प्रभु की रीत है;
है कर्म पाश कठिन अति नहीं पुण्यवान भी बच सके,
पर धैर्यरथधारी कभी सन्मार्ग से नहीं डिग सके | ७

(तर्ज – नरेन्द्र छंद)

वर्ष चतुर्दश व्यतीत हुए अब राम अवध में प्रवेश करे,
लखन सिया सह राघव लख कर भ्रात भरत संतोष धरे;
मात-भ्रात सह अवधेश्वर अब सुख से काल व्यतीत करे,
किन्तु महासती सिय के शील में अवधपूरीजन शंक करे| ८

विवश व्यथित चित्त राजधर्म हित रामप्रिया का त्याग करे,
कालांतर में पितु दर्शन को लवकुश अवध प्रयाण करे;
पुत्र मिलन से हर्ष धरे पर सीता को न स्वीकार करे,
नश्वर जग से विरत जानकी पृथ्वीमति की शरण गहे | ९

राज काज में कुशल प्रजापति करते नीति से नृपताई,
सद्-गुण पूरण रामचंद्र का राम राज्य था सुखदायी;
लखन वियोग को सह नहीं पाये भ्रात विरह था अतिभारी,
चरितमोह की देखो महिमा व्याकुल तद्भव शिवगामी | १०

(तर्ज – हरिगीत छंद)

सुरग से आगत जटायु जीव सेनापति कहे,
हे नाथ ! तज कर मोह ममता रत्नत्रय की शरण ले;
थिर चित्त होकर विनययुत नृप सुव्रत गुरु के चरण में ,
नर नारी नेक सहस्त्र सह श्रीराम जिनदीक्षा ग्रहे | ११

(तर्ज – नरेन्द्र छंद)

पंचविंशति वर्ष काल तक मूर्तिमान मुनि तप धारे,
वन गुफा पर्वत में जाकर जीत परिषह ध्यान धरे;
उपसर्गों से विजीत रघुवर घाति करम का हनन करे,
माघ शुकल द्वादशी के शुभ दिन केवल लक्ष्मी वरण करे| १२

दिव्यध्वनि में सुर सीतेन्द्र को राग त्याग का बोध करे,
लखन दशानन अच्युतपति के भावि भवों का कथन करे;
गंध कुटी में सप्त बरस तक दिव्यध्वनि सन्देश खिरे,
फिर रघुनंदन कर्म नाशकर लोकशिखर के नाथ बने| १३

(तर्ज – हरिगीत छंद)

है धन्य पद्म चरित ये भविजन श्रवण जो जो करे,
इहलोक परभव सौख्य पाकर मोक्षसुख निश्चित वरे;
पुनि-पुनि हृदय में ध्याय 'आत्मानंद' को सत्वर वरुं,
अभिलाष यह निज मन में धर प्रभु-पद्म को वंदन करूं| १४

(दोहा)

तुंगीगिरि उत्तंग से, मोक्ष गए रघुवीर;
हनुमान सुग्रीव सह, गव गवाख्य महानील | १

राघव राम सियापति, पद्मनाभ बहुनाम;
जानकीवल्लभ रघुराई, रामचंद्र सुखधाम | २

ॐ ह्रीं श्रीरामचंद्रभगवज्जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा |

इत्याशीर्वाद: परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्